प्रश्न 12. पारिजात हरण नाटक एवं नाटककारक परिचय दिअ।

उत्तर :– उमापति उपाध्याय मैथिली साहित्यमे कवि आ नाटककारक रूपमे विख्यात छथि। हिनक दू गोट उपाधि प्रसिद्ध अछि–कविपंडित मुख्य आ सुमति। मुदा उमापति प्राचीने कवि जकाँ हिनक काल विवादास्पद अछि। प्रो0 सुरेन्द्र झा सुमन आ डॉ0 ग्रियर्सन मिथिलेश–हरिहरदेव जे कर्णाटवंशीय हरिसिंहदेव 1305ई0 सँ 1324ई0 धरि शासक रहल। हुनके आश्रयमे ई छलाह। मुदा पं0 चेतनाथ झा अपन पारिजात हरणक भूमिकामे नेपालस्थित सप्तरी परगनाक मकमानी हिन्दूपति (17म शताब्दी) अभिधानधारी एक माण्डलिक राजाक आश्रित पण्डित छलाह। एतय विद्यापति सेहो लिखनावलीक रचना कैलनि। डॉ0 जयकान्त मिश्रक मते ओ हिन्दूपति बुन्देलखण्ड नरेश महाराज छत्रसालक प्रपौत्र गढ़मण्डलक राजा हिन्दपति (17म शताब्दी) छथि। हिनके राजगुरू उमापति उपाध्याय छलाह।

डॉ0 रामदेव झाक अनुसार सोलहम शताब्दीक तेसर चरण ओ सतरहम शताब्दीक प्रथम तीन चरणक मध्य आगाँ–पाछाँ किछु वर्ष छोड़िक उमापतिक जीवनकाल रहल होयतनि। मुदा कोनहु स्थितिमे 1570ई0 सँ पूर्व ओ 1670ई0 के पश्चात् नहि खीचल जा सकैत अछि।

पारिजात हरण उमापतिक एकमात्र उपलब्ध लघुकाय नाटक थिक, जाहिमे 21 गोट मैथिली गीत, उनैस गोट संस्कृत श्लोक तथा संवाद संस्कृत ओ प्राकृत मे अछि। मैथिली गीतआ संस्कृत श्लोक पाण्डित्यपूर्ण अछि। एहि नाटकक कथानक हरिवंश पुराणक 124 सँ 135 अध्यायक आधार पर अछि यैह कथावस्तु भागवतमे सेहो भेटैत अछि। एहि नाटकके डॉ0 जयकान्त मिश्र किरतनियाँ नाटक मध्य बड़ महत्वपूर्ण स्थान देने छथि।

एहि नाटकक कथावस्तु अछि नारद स्वर्गसँ पारिजातक एकटा फूल कृष्णके देलथिन जे ओ लगमे बैसलि रूक्मिणीके द देलथिन। ई जखन सत्यभामा सुनलनि त सौतिनियाँ डाहसँ स्याह भ गेलीह आ कृष्णसँ रूसि गेलीह। कृष्ण जखन मनवय गेलथिन त कहलथिन जे हमरा सौसे पारिजातक गाछ आनि दिअ। कृष्णा इन्द्रके समाद देल जे पारिजातक गाछ हमरा पठा दिअ, परन्तु इन्द्रके ई स्वीकार नहि भेलनि। कृष्ण तखन अर्जुनक सहायतासँ स्वर्ग पर चढ़ाइ कयलनि आ इन्द्रसँ पारिजात जीति क आनि सत्यभामाके उपहार स्वरूप

Scanned by CamScanner

देलथिन। सत्यभामा पारिजातक गाछ अपना आंगनमे रोपि देलनि। तखन नारद हुनका उपदेश देलथिन जे पारिजातक गाछ तर बैसि क किछु दान ब्राह्मणके देल जाइन त ओ दान इहलोक परलोक मे अक्षय रहि जाइत छैक।

नरदक उपदेश पर सत्यभामा पारिजात गाछक तर वैसिक कृष्णके आ सुभद्रा अर्जुनके दान कैलनि। एहि तरहे कृष्ण आ अर्जुन नारदक टहलू बनि गेलाह आ ओ दुनू गोटाके बेचवाक विचार प्रकट कैलनि। सत्यभामा कृष्णके आ सुभद्रा अर्जुनके कीनि लेलनि। बदलामे नारदके दुनू गोटासँ एकटा क गाय भेटलनि। एहि तरहे ई नाटक सुखान्त अछि।

एहि नाटकमे संस्कृत नाटकक परिपाटीक अनुसरण कैल गेल अछि। नायक प्रख्यातवंशक राजा, प्रतावान, धीरोदत्त आ गुणवान छथि। श्रृगाररस एहि नाटकक मुख्य रस अछि। वीर आ हास्य रसक सेहो समावेश कैल गेल अछि। परंच संस्कृत नाटकक आदर्शसँ भिन्नता सेहो अछि। संस्कृतमे सामान्यतः पांच अंकक होइत अछि। मुदा पारिजातहरण एक अंकक अछि। एहि नाटकमे सूत्रधार एकटा नव पारिजात मंगलम् कहि अभिनयक प्रस्ताव कयलनि अछि। रूपकक जे दशो रूप वर्णित अछि ताहिमे मंगल नामक कोनो रूपकक चर्चा नहि अछि। उमापति कविक संग–संग पंडितमुख्य सेहो छलाह, ते ई नहि कहल जा सकैछ जे हुनका नाटकक लक्षण भेदसँ परिचय नहि छलनि।

पारिजातहरणमे नाटकक सभ गुण विद्यामान अछि। नाटककार स्वयं एक रनाम पारिजात हरण नाटकम् कयने छथि। एहि नाटकमे उमापति नाटककारसँ बेसी कविक रूपमे प्रकट भेल छथि। एकर कारण अछि हिनका समय धरि आबि साहित्य केवल सुधीजनक परितोषक वस्तु नहि रहल प्रत्युत सामान्य लोकक परितोषक वस्तु सेहो भ गेल। ते सर्वजनके जनतव हेतु मैथिली गीतक प्रयोग वृहद रूपमे कैलनि।

Scanned by CamScanner